MAKTABATUL MADINA INDIA

हफ़्तावार रिसाला : 440
Weekly Booklet : 440

Jo Aaqa ﷺ Ki Pasand Woh Apni Pasand (Hindi)

जो आक़ा صلی اللہ علیہ والہ وسلم की पसन्द वोह अपनी पसन्द

(अमीरे अहले सुन्नत का बयान)

(सफ़हात : 24)

माल की फ़िक्र में एक ताजिर की मौत 07
दुनिया व आख़िरत में कामयाब कौन ? 22
नमाज़ में सुस्ती करने वालों की सज़ा 19
आंखों में जहन्नम की आग 24

शैखे़ तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط

जो आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पसन्द वोह अपनी पसन्द

दुआए अ़त्तार : या रब्बे करीम ! जो कोई 24 सफ़हात का रिसाला “जो आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पसन्द वोह अपनी पसन्द” पढ़ या सुन ले उसे सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के इ़श्क़े रसूल से हि़स्सा अ़ता कर और उस को मां बाप और ख़ानदान समेत जन्नतुल फ़िरदौस में बे हि़साब दाख़िला नसीब फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہُ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर 100 मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह पाक उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शोहदा के साथ रखेगा। (معجم اوسط، 5/252، حدیث:7235)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

चादर आग में डाल दी

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन शुऐ़ब رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : एक मरतबा मैं नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा, मेरे ऊपर कुसुम के रंग में हल्की सी रंगी हुई एक चादर थी, येह देख कर आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : येह क्या ओढ़ रखा है ? मुझे इस सुवाल से नागवारी के आसार मालूम हुए। जब मैं घर वालों के पास वापस पहुंचा तो उन्हों ने चूल्हा जला रखा था चुनान्चे मैं ने वोह चादर इस में डाल दी। दूसरे रोज़ जब बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवा तो प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा : वोह चादर कहां है ? मैं ने अ़र्ज़ किया : या

रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह तो मैं ने आग में डाल दी। इरशाद फ़रमाया : तुम ने वोह चादर औ़रतों को क्यूं न पहना दी ? औ़रतों को पहना देने में कोई ह़रज न था।

(ابو داؤد، 4/73، حدیث:4066)

मकान तोड़ कर बराबर कर दिया

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि एक मरतबा रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने दौलत कदे से बाहर कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे तो रास्ते में एक ऊंचा मकान देखा जो गुम्बद नुमा बना हुवा था। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم से पूछा : येह क्या है ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : येह फ़ुलां अन्सारी का मकान है, येह सुन कर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ामोश हो गए, किसी दूसरे वक़्त जब वोह अन्सारी बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए और सलाम अ़र्ज़ किया तो सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाब मरह़मत न फ़रमाया : वोह समझे कि शायद आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तवज्जोह नहीं है लिहाज़ा दोबारा सलाम अ़र्ज़ किया मगर दूसरी बार भी जवाब न मिला। अब वोह घबरा गए और वहां मौजूद सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم से कहने लगे : ख़ुदा की क़सम ! मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नाराज़ पाता हूं। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم ने उन्हें बताया कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ ले गए थे तो रास्ते में तुम्हारे मकान को देख कर पूछा था कि येह किस का है ? (यानी हमारा अन्दाज़ा येही है कि तुम से नाराज़ी का सबब तुम्हारी तामीर कर्दा बुलन्द इमारत है। येह सुन कर) वोह (अन्सारी) अपनी इमारत की त़रफ़ लौटे और उसे ढा कर ज़मीन बोस कर दिया। इत्तिफ़ाक़ से एक बार फिर सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का उसी मक़ाम से गुज़र हुवा तो देखा वोह क़ुब्बा वहां नहीं है। इस के बारे में पूछा : तो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! जब हम ने उस अन्सारी को बताया कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तुम्हारे मकान को देख कर ना पसन्दीदगी का इज़्हार फ़रमाया है और इस वज्ह से तुम्हारे सलाम का जवाब भी नहीं दिया तो

उन्हों ने अपने मकान को इस त़रह़ गिराया कि उस का नामो निशान बाक़ी न रहा। रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हर तामीर इन्सान पर वबाल है सिवाए उस के कि जो सख़्त ज़रूरत और मजबूरी की हो। (ابوداود، 4/460، حدیث:5237ملخصًا)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ عَنْہُم प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से किस क़दर मह़ब्बत किया करते थे कि जो बात प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को नागवार गुज़रती सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ عَنْہُم उसे बिल्कुल जड़ ही से ख़त्म कर दिया करते थे जैसा कि सय्यिदुना अ़म्र बिन शुऐ़ब رَضِیَ اللہُ عَنْہُ की चादर सरकार صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को नागवार गुज़री तो उन्हों ने अपनी उस चादर को आग में डाल कर ख़त्म कर दिया। इसी त़रह़ जब एक अन्सारी के मकान को (क़ुब्बा नुमा होने की वज्ह से) सरकार صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नापसन्द फ़रमाया तो उन्हों ने अपने मकान को बिल्कुल मल्यामेट कर दिया। शरीअ़त सरकार صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पसन्द की है, सरकार जो कहें, जो चाहें, जो फ़रमाएं, जो पसन्द करें जो नापसन्द करें, शरीअ़त के अह़कामात उसी पर मुरत्तब होते हैं।

हमारी ह़ालते ज़ार

आप ने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ عَنْہُم का जज़्बए इत़ाअ़त और इ़श्क़ो उल्फ़त मुलाह़ज़ा किया, अब ज़रा अपना जज़्बा भी देख लीजिये और ग़ौर कीजिये कि एक त़रफ़ वोह भी मुसलमान थे और दूसरी त़रफ़ हम भी मुसलमान हैं लेकिन हमारे और उन के दरमियान कितना वाज़ेह़ फ़र्क़ है ? उन्हों ने ऐसा वलवला, जज़्बा, इ़ज़्ज़त, हिम्मत, जुरअत और त़ाक़त पाई थी कि जिधर जाते कामयाबी आगे बढ़ कर उन्हें गले लगाती और मन्ज़िल चल कर उन के क़दमों से लिपट जाती जब कि दूसरी त़रफ़ हम जैसे मुसलमान हैं कि जिधर जाते हैं मन्ज़िल दूर होती चली जाती है। देखिये ! उन के सरदार भी मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم थे और हमारे सरदार भी मदीने

के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं लेकिन वोह इत़ाअ़त शिआ़र थे जब कि हम ना फ़रमान हैं, वोह इत़ाअ़त शिआ़र होने की वज्ह से मुअ़ज़्ज़ज़ ठहरे जब कि हम नाफ़रमान होने के बाइ़स रुस्वा हुए। किसी ने क्या ख़ूब कहा है :

वोह मुअ़ज़्ज़ज़ थे ज़माने में मुसलमां हो कर   और तुम ख़्वार हुए तारिके क़ुरआं हो कर

ऐ मुसलमानो ! याद रखो ! तुम उस वक़्त तक कामयाब नहीं हो सकते जब तक प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पसन्द को अपनी पसन्द पर तरजीह़ नहीं दोगे। देखो ! अल्लाह पाक के प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को नमाज़ पसन्द है जब कि ग़ाफ़िल मुसलमान को नींद पसन्द है, मुअज़्ज़िन पुकार पुकार कर एलान करता है : "اَلصَّلٰوۃُ خَیْرٌ مِّنَ النَّوْمِ" यानी नमाज़ नींद से बेहतर है मगर आज का मुसलमान चादर ताने सोया रहता है। प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "جُعِلَتْ قُرَّۃُ عَیْنِیْ فِی الصَّلٰوۃِ" यानी मेरी आंखों की ठन्डक नमाज़ में बनाई गई है। (نسائی، ص644، حدیث:3946) लेकिन अफ़्सोस ! आज के ग़ाफ़िल मुसलमानों को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक आंखों की ठन्डक से कोई सरोकार नहीं, आह ! रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आंखों की ठन्डक नमाज़ में है मगर ग़ाफ़िल मुसलमानों की आंखों की ठन्डक फ़िल्में ड्रामे देखने और बदनिगाही करने में है।

अफ़सोस ! हम ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पसन्द को अ़मली त़ौर पर अपनी पसन्द नहीं बनाया, देखो ! रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को दाढ़ी ज़ुल्फ़ें इ़मामे का ताज पसन्द है, लेकिन तुम्हारी पसन्द ? मैं अपने पास से नहीं कहता बल्कि अल्लाह के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है : दाढ़ी, बढ़ाओ, मूंछें पस्त करो और आतश परस्तों की मुख़ालफ़त करो (यानी उन जैसे चेहरे मत बनाओ)।

(بخاری، 4/75، حدیث:5892ملخصاً)

आज अगर कोई ज़ुल्फ़ें रखे और चेहरे पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ एक मुठ्ठी दाढ़ी सजाए तो ख़ुद को मुसलमान कहलाने वाले बद क़िस्मती से उसे ह़क़ारत की

नज़र से देखते और "मुल्ला" कह कर उस का मज़ाक़ उड़ाते हैं, ऐसा हुल्या अपनाने पर मां कुढ़ती है और बाप उस पर बिगड़ता है, अरे नादान बाप ! तुझे तो ख़ुशी से झूमना चाहिये कि तू ने जिस का कलिमा पढ़ा तेरे लाडले ने उस की सुन्नत को अदा किया है।

याद रखिये ! अच्छों की नक़्ल बहरहाल अच्छी ही होती है। इस ज़िम्न में दो ईमान अफ़रोज़ वाक़िआत पढ़िये :

﴾1﴿ अच्छों की नक़्ल की बदौलत नजात मिल गई

अल्लाह पाक ने जब फ़िरऔन और उस की क़ौम को दरिया में ग़र्क़ किया तो उन में से वोह शख़्स ज़िन्दा बच गया जो लिबास और बोल चाल में हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام की नक़्ल किया करता था और फ़िरऔन और उस की क़ौम उस की इन हरकतों की वज्ह से हंसा करते थे। हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام को इस के बच जाने पर बड़ा तअज्जुब हुवा और बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : येह तो दूसरे फ़िरऔनियों के मुक़ाबिले में मुझे ज़ियादा तक्लीफ़ पहुंचाता था ! अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया : ऐ मूसा ! हम ने इसे इस लिये ग़र्क़ नहीं किया कि इस ने तुम्हारे जैसा लिबास पहना हुवा था और हम तो अपने महबूब बन्दों की सी सूरत इख़्तियार करने वाले को भी अ़ज़ाब नहीं देते।

(مرقاۃ المفاتیح، 8/155، تحت الحدیث:4347)

﴾2﴿ सर और दाढ़ी में आटा छिड़कने की अनोखी वसिय्यत

एक मस्ख़रे ने मरते वक़्त अपने दोस्त को वसिय्यत की, कि जब मुझे दफ़्न करने लगो तो मेरी दाढ़ी और सर के बालों में आटा छिड़क देना, दोस्त ने कहा : यार ! तुम ज़िन्दगी में तो मज़ाक़ मस्ख़री करते रहे हो अब आख़िरी वक़्त में तो इस से बाज़ रहो ! उस ने कहा : अगर तुम वाक़ेई मेरे ख़ैरख़्वाह हो तो जो मैं कहता हूं वोह

कर देना। दोस्त हंस कर राज़ी हो गया और इन्तिक़ाल के बाद उस ने दफ़्न करते वक़्त उस की दाढ़ी और सर के बालों पर आटा छिड़क दिया। चन्द रोज़ बाद अपने मर्हूम दोस्त को ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ؟ यानी अल्लाह पाक ने तुम्हारे साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? मर्हूम बोला : मुझ से सुवाल हुवा कि तुम ने आटा छिड़कने की वसिय्यत क्यूं की थी ? मैं ने अ़र्ज़ की : ऐ अल्लाह ! मैं ने तेरे मह़बूब मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद सुना था : "اِنَّ اللّٰہَ یَسْتَحْیِیْ عَنْ ذِی الشَّیْبَۃِ الْمُسْلِمِ" यानी बिलाशुबा अल्लाह पाक मुसलमान के बुढ़ापे से ह़या फ़रमाता है। बूढ़ा होना तो मेरे इख़्तियार में न था इस लिये सोचा कि बुढ़ापे की सी सूरत बना लूं। अल्लाह पाक ने फ़रमाया : जाओ ! मैं ने तुम्हें बख़्श दिया। (मादिने अख़्लाक़, स. 54)

सफ़ेद बाल इ़ज़्ज़तो वक़ार हैं

ह़दीस शरीफ़ में है : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام ने सब से पहले सफ़ेद बाल मुलाह़ज़ा फ़रमाया तो अ़र्ज़ की : ऐ रब ! येह क्या है ? इरशाद फ़रमाया : येह वक़ार है। अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! मेरा वक़ार ज़ियादा कर।

(مؤطا امام مالک، 2/415، حدیث:1756 ملخصاً)

ऐ आशिक़ाने रसूल ! याद रखिये ! जब तक हम प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पसन्द को अपनी पसन्द पर तरजीह़ नहीं देंगे उस वक़्त तक हम दुनिया में नाकाम रहेंगे और आख़िरत में भी कामयाब होने की उम्मीद बहुत कम है। यक़ीनन अल्लाह पाक की रह़मत बहुत बड़ी है लेकिन ज़रा सोचिये ! हमारी सरकशी किस ह़द तक पहुंच चुकी है ! हम किस क़दर बेराह रवी का शिकार हो चुके हैं ! अगर पहले बन्दा गुनाह करता था तो नादिम भी होता था मगर अब ह़ाल येह है कि गुनाह कर के ख़ुश होता है और कोई समझाए तो उल्टा उस का मज़ाक़ उड़ाता है।

मुझे आलाते मूसीक़ी तोड़ने के लिये भेजा गया

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आज कल दीगर गुनाहों की त़रह़ मूसीक़ी भी बहुत ‘आम हो चुकी है ह़ालांकि ह़दीसे पाक में इस की मज़म्मत बयान की गई है, जैसा कि सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे पाक है : मुझे आलाते मूसीक़ी को तोड़ने के लिये भेजा गया है।

(کنزالعمال، جز:15، 8/99، حدیث:40682)

आह ! एक त़रफ़ तो प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह इरशादे पाक है जब कि दूसरी त़रफ़ हम मुसलमानों का किरदार है कि घर घर से मूसीक़ी की धुन सुनाई दे रही होती है, कौन सा घर ऐसा है जिस में गाने बाजे नहीं बजते ? कौन सा घर ऐसा है जिस में फ़िल्में ड्रामे नहीं देखे जाते ?

जितना सरमाया ज़ियादा होता है बन्दा रब से उतना ही ग़ाफ़िल हो जाता है, दिन रात उस को माल की फ़िक्र खाए जाती है फिर डाकूओं का ख़त़रा अलग रहता है, टेक्सेशन डिपार्टमेन्ट वाले उस के घर का चक्कर काट रहे होते हैं।

बा’ज़ मालदार बेचारे अपने माल की फ़िक्र में इस क़दर मुब्तला होते हैं कि अपनी जान से भी हाथ धो बैठते हैं। इस ज़िम्न में एक इ़ब्रत अंगेज़ वाक़िआ पढ़िये :

माल की फ़िक्र में एक ताजिर की मौत

एक अ़जीब वाक़िआ हुवा कि मालदार शख़्स को टेक्स डिपार्टमेन्ट की त़रफ़ से एक करोड़ रुपिये टेक्स अदा करने का ऑफ़िशियली नोटिस भेजा गया। इस ने ऑफ़ीसर्ज़ से रिश्वत की बारगेनिंग शुरूअ़ कर दी ताकि कम से कम में जान छूट जाए। उसे कहा गया कि अगर आप ऑफ़िशियली त़ौर पर टेक्स अदा करना चाहते हैं तो आप को पूरे एक करोड़ रुपिये अदा करना होंगे और अगर पिछले दरवाज़े से देना

चाहते हैं (यानी रिश्वत का लेन देन कर के) तो आधों में काम हो जाएगा। वोह मालदार शख़्स शायद 30 लाख रिश्वत देने पर रिज़ामन्द था, अलग़रज़ बात नहीं बन पाई और ऑफ़ीसर्ज़ चले गए। देखिये ! एक त़रफ़ मुसलमानों की येह ह़ालत है कि रिश्वत का लेन देन कर रहे हैं जब कि दूसरी त़रफ़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : اَلرَّاشِیْ وَالْمُرْتَشِیْ کِلَاھُمَا فِی النَّار यानी रिश्वत लेने वाला और देने वाला दोनों जहन्नमी हैं। (معجم اوسط، 1 / 550، حدیث:2026) लेकिन अफ़सोस ! आज के मुसलमानों को इस त़रह़ की वई़दों से कहां डर लगता है ! बहरेह़ाल उस मालदार शख़्स को रात भर येह फ़िक्र खाए जा रही थी कि उस से बत़ौरे रिश्वत 50 लाख रुपिये मांगे जा रहे हैं बिल आख़िर इसी सोचो बिचार में ब ज़ाहिर उसे नींद ने आ लिया। जब सुब्ह़ हुई तो घर वालों ने उसे जगाने की ख़ूब कोशिश की लेकिन पता चला कि 50 लाख की फ़िक्र में उस का हार्ट फ़ेल हो गया है और अब वोह हमेशा की नींद सो चुका है।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने दौलत उस मालदार शख़्स के क्या काम आई ? याद रखिये ! दौलत किसी को मौत से नहीं बचा सकती, अगर दौलत किसी को बचा सकती तो क़ारून जैसी दौलत आज किसी के पास नहीं। क़ारून इतना मालदार था कि उस के ख़ज़ाने की चाबियां एक बहुत बड़ी जमाअ़त उठाती थी, कहा जाता है कि वोह जमाअ़त चालीस अफ़राद पर मुश्तमिल थी। (تفسیر صاوی، پ20، القصص، تحت الآیۃ:76، 4/1544 ملخصاً) ज़रा सोचिये ! जिस के ख़ज़ाने की चाबियां एक जमाअ़त उठाती हो उस का ख़ज़ाना कितना होगा लेकिन वोह ख़ज़ाना उस के काम न आया।

क़ारून का इ़ब्रतनाक अन्जाम

जब ह़ज़रते मूसा कलीमुल्लाह عَلَيۡهِ السَّلَام ने अल्लाह पाक के हुक्म पर क़ारून से ज़कात का मुत़ालबा किया तो वोह उस की अदाएगी के लिये तय्यार न

हुवा, ह़ीले बहानों से काम लेने लगा और आख़िरेकार ज़कात का इन्कार करते हुए कहने लगा : वाह ! जब माल मैं ने कमाया है तो तुम्हें कैसे दे दूं ? फिर उस ने एक औ़रत को मालो दौलत दे कर इस बात के लिये तय्यार किया कि जब मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام) लोगों को जमा कर के वाज़ फ़रमा रहे हों उस वक़्त वोह उन पर अपने साथ बुराई करने का इल्ज़ाम लगाए और यूं مَعَاذَاللّٰه ! अ़वाम के सामने उन्हें रुस्वा कर दे। एक दिन जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام लोगों को जमा कर के वाज़ो नसीह़त फ़रमा रहे थे ऐन उसी वक़्त क़ारून ने आप عَلَيْهِ السَّلَام को टोका और कहा कि फ़ुलां औ़रत के साथ आप ने مَعَاذَاللّٰه ! बुराई की है। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام इस बात पर बहुत रंजीदा हुए और फ़रमाया : उस औ़रत को मेरे सामने लाओ। जब वोह औ़रत तस्दीक़ के लिये बुलाई गई तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने जलाल भरे अन्दाज़ में फ़रमाया : सच सच बताओ ! ह़क़ीक़त क्या है ? वोह औ़रत कांप उठी और उस ने सच सच बता दिया कि मुझे क़ारून ने कसीर मालो दौलत दे कर आप पर बोहतान लगाने के लिये तय्यार किया है।

उस वक़्त ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام आबदीदा हो कर सज्दे में चले गए और सज्दे की ह़ालत में आप عَلَيْهِ السَّلَام ने दुआ़ मांगी : ऐ अल्लाह ! क़ारून पर अपना क़हरो ग़ज़ब नाज़िल फ़रमा दे। इस के साथ ही ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने येह एलान भी कर दिया कि मेरे साथी मेरी त़रफ़ और क़ारून के चाहने वाले क़ारून की त़रफ़ हो जाएं तो सिवाए दो ख़ुशामदख़ोर और चापलूस अफ़राद के सभी लोग आप عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ आ गए। अब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने ज़मीन को हुक्म दिया कि ऐ ज़मीन ! तू क़ारून को पकड़ ले तो वोह एक दम घुटनों तक ज़मीन में धंस गया, फिर आप ने दोबारा ज़मीन से येही फ़रमाया तो वोह कमर तक ज़मीन में धंस गया। येह देख कर क़ारून तिलमिलाने और बिलबिलाने लगा मगर उस का रोना धोना किसी काम न आया और वोह बराबर ज़मीन में धसता चला गया यहां तक कि बिल्कुल

ज़मीन में धंस गया। जब क़ारून धंस गया तो उस के दो साथी जिन पर बदबख़्ती सुवार हो चुकी थी प्रोपेगन्डा करने लगे कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने क़ारून को इस लिये ज़मीन में धंसाया ताकि उस के मकान और ख़ज़ानों पर क़ब्ज़ा कर लें। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को फिर जलाल आया और आप ने अल्लाह पाक से दुआ मांगी कि क़ारून का मकान और ख़ज़ाना भी ज़मीन में धंस जाए चुनान्चे उस का मकान और ख़ज़ाना भी ज़मीन में धंसते गए और अब क़ियामत तक क़ारून ज़मीन में धंसता रहेगा और उस के साथ उस का ख़ज़ाना भी उस के सर पर बोझ बन कर धंसता रहेगा। (تفسیر صاوی، پ20، القصص، تحت الآیۃ:81، 4/1546-1547 ملتقطاً)

ऐ आशिक़ाने रसूल ! पता चला कि सरमाया और माल सरासर वबाल है और येह किसी को नहीं बचा सकता। याद रहे ! दुनिया और आख़िरत की कामयाबी मालदार होने में नहीं अल्लाह पाक और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी में है। हम उस वक़्त तक कामयाब नहीं हो सकते जब तक अल्लाह पाक और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पसन्द को अपनी पसन्द पर तरजीह़ नहीं देंगे लिहाज़ा हमें हर मुआ़मले में अल्लाह पाक और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पसन्द को अपनी पसन्द पर तरजीह़ देनी चाहिये मसलन हमारा दिल चाह रहा है कि नमाज़े फ़ज्र के वक़्त सोए रहें और अपनी नींद पूरी करें लेकिन अल्लाह पाक और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया है तो अब हमें उन की पसन्द को अपनी पसन्द पर तरजीह़ देते हुए नमाज़ पढ़नी चाहिये। इसी त़रह़ अगर दाढ़ी मुंडाने का दिल चाहे तो इस मुआ़मले में भी दिल की मुख़ालफ़त करनी चाहिये और सुन्नत के मुत़ाबिक़ एक मुठ्ठी दाढ़ी रखनी चाहिये मगर अफ़सोस ! आज कल कोई कोई ऐसा करता है वरना हर त़रफ़ नफ़्सो शैत़ान की इत़ाअ़त का ज़ोर है।

याद रहे ! जो नफ़्स की मुख़ालफ़त करता है वोह कामयाब होता है, चाहे वोह कोई भी हो इस ज़िम्न में एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ पेशे ख़िदमत है, चुनान्चे

मरीज़ ख़ुद तबीब बन गया

एक मरतबा सय्यिदुना शैख़ ख़्वाजा महबूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه सख़्त बीमार हो गए, मुरीदीन ने अ़र्ज़ की : आलीजाह ! यहां एक ग़ैर मुस्लिम झाड़ फूंक करता है और उस का इ़लाज बहुत चलता है अगर हुक्म हो तो उस के पास ले चलें, फ़रमाया : मैं इ़लाज के लिये ग़ैर मुस्लिम के पास नहीं जाऊंगा, मरज़ ने मज़ीद शिद्दत इख़्तियार की और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه बेहोश हो गए, मुरीदीन उठा कर उसी ग़ैर मुस्लिम के पास ले गए, उस ने फूंक मारी तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه को होश आ गया और सेहतयाब हो गए, आप ने अपने आप को सेहतमन्द पाया तो उस ग़ैर मुस्लिम को देख कर उस से पूछा : तुम्हें इ़लाज में येह मलका कैसे हासिल हुवा ? उस ने कहा : मेरे गुरू (यानी उस्ताद) ने मुझ से अ़हद लिया है कि नफ़्स जो कुछ कहे उस का उलट करना लिहाज़ा जब ठन्डा पानी पीने की ख़्वाहिश होती है तो गर्म पीता हूं, चावल खाने को जी चाहता है तो रोटी खा लेता हूं, इस त़रह नफ़्स के कहने का उलटा करते रहने से मुझ में येह क़ुव्वत पैदा हो चुकी है, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : येह बताओ ! तुम्हारा नफ़्स मुसलमान होने की इजाज़त देता है या नहीं ? कहा : मना करता है, तो आप ने फ़रमाया : येह मुसलमान होने से मना करता है, तुम्हारे उसूल के मुत़ाबिक़ तुम्हें उस के कहने का उलट करते हुए मुसलमान हो जाना चाहिये, येह बात आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने कुछ इस दिलनशीन अन्दाज़ में इरशाद फ़रमाई कि तासीर का तीर बन कर उस के दिल में पैवस्त हो गई और वोह बेसाख़्ता पुकार उठा कि मैं अपने कुफ़्र से तौबा कर के मुसलमान होता हूं और फिर वोह कलिमा पढ़ कर मुसलमान हो गया। (फ़ैज़ाने सुन्नत, 1 / 736)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! एक ग़ैर मुस्लिम ने नफ़्स की मुख़ालफ़त कर के कितनी तरक़्क़ी ह़ासिल की और आख़िरेकार अल्लाह पाक ने उसे एक वली की निगाहे फ़ैज़ की बरकत से इस्लाम की दौलत से मालामाल फ़रमा दिया। अफ़सोस ! हम नफ़्स के परस्तार (यानी ग़ुलाम) हैं और हमारा नफ़्स जिस चीज़ का मुतालबा करता है हम उसे कर गुज़रते हैं। नफ़्स पैसों का मुतालबा करता है तो हम न ह़राम देखते हैं न ह़लाल, न सवाब देखते हैं और न गुनाह, हमारी येही सोच होती है कि बस हमें पैसा चाहिये, अब चाहे वोह जूए के ज़रीए ह़ासिल किया जाए या मिलावट के ज़रीए, रिश्वत के ज़रीए हाथ आए या सूद के ज़रीए। हम अपने तईं येह गुमान करते हैं कि हम बहुत शरीफ़ हैं क्यूंकि हम किसी का घर नहीं उजाड़ते, किसी की जेब नहीं काटते, अस्लह़ा दिखा कर लूट मार की वारदातें नहीं करते। याद रखिये ! अस्लह़ा दिखा कर लूट मार की वारदातें करने वाले वाक़ेई डाकू हैं लेकिन मुआशरे में ऐसे बहुत से लोग मौजूद हैं जो बज़ाहिर डाकू तो नहीं लेकिन डाकूओं की त़रह़ उन का मक़्सद भी लोगों को लूटना होता है जैसा कि रिश्वत का लेन देन कर के मिलावट वाला माल बेचने वाले। बरोज़े क़ियामत अल्लाह पाक की बारगाह में ऐसे तमाम लोगों की गिरिफ़्त होगी क्यूंकि जिस त़रह़ डकेतियां कर के लोगों को लूटने वाले जहन्नम में जाने वाला काम कर रहे हैं इसी त़रह़ रिश्वत का लेन देन कर के मिलावट वाला माल बेचने वाले भी जहन्नम में जाने वाला काम कर रहे हैं।

याद रहे ! जुर्म करने वाले दुनिया में तो रिश्वत दे कर या किसी की सिफ़ारिश की वज्ह से छूट जाते हैं लेकिन जब मौत का शिकार हो कर अन्धेरी क़ब्र में पहुंचेंगे तो वहां न रिश्वत काम आएगी और न किसी की सिफ़ारिश। अगर अल्लाह पाक और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नाराज़ हुए तो ऐसों को अ़ज़ाबे क़ब्र से कौन छुड़ाएगा ? लिहाज़ा ऐसे लोगों को फ़ौरन तौबा कर के गुनाहों भरे काम छोड़ देने चाहियें।

हो सकता है किसी के ज़ेहन में येह बात आए कि अभी तो उ़म्र बहुत पड़ी है बाद में तौबा कर लेंगे तो ऐसों के लिये अ़र्ज़ है कि अगर्चे मौत का वक़्त मुक़र्रर है मगर हमें मालूम नहीं कि कब आएगी ? हम सुब्हो शाम कभी भी अचानक मौत का शिकार हो कर इस दुनियाए पाएदार से रुख़्सत हो जाएंगे ! किसी ने क्या ख़ूब कहा है :

अ़जब सरा है येह दुनिया यहां पर शामो सह़र
किसी की कूच किसी का क़ियाम होता है

यानी कोई मौत का शिकार हो कर इस दुनियाए फ़ानी से रुख़्सत होता है और कोई पैदा हो कर इस दुनिया में क़दम रखता है, यूं अरबों खरबों अफ़राद इन्तिक़ाल कर चुके हैं और अब भी रोज़ाना की बुन्याद पर लाखों लोग इन्तिक़ाल कर रहे हैं और क़ियामत तक येह सिल्सिला जारी व सारी रहेगा।

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! ग़ौर कीजिये ! इस दुनिया की ह़क़ीक़त क्या है और हम इस पर क्यूं फ़रेफ़्ता हैं ? ख़ुदारा ! अपनी इस मुख़्तसर सी ज़िन्दगी पर ग़ौर कीजिये और अपने नाज़ुक जिस्म पर रह़म खाइये कि येह नाज़ुक जिस्म न तो गर्मी बरदाश्त कर सकता है और न सर्दी। आज मुसलमान बड़े शौक़ से फ़िल्में ड्रामे देखते, गाने बाजे सुनते, मिलावट वाला माल बेचते, झूट बोलते, गालियां बकते, नमाज़ें क़ज़ा करते, दाढ़ियां मुंडाते और मां बाप को सताते हैं, इस के साथ साथ अपनी औलाद की दीन और सुन्नत के मुत़ाबिक़ तरबियत नहीं करते बल्कि مَعَاذَاللّٰه ! बाज़ बद नसीबों को तो सुन्नतों से चिढ़ होती है न जाने ऐसों का क्या बनेगा ? देखिये ! न हम बारिश बरदाश्त कर सकते हैं न सैलाब, पटाख़ा फूट जाए तो चौंक पड़ते हैं, अचानक बिल्ली मियाउं करे तो सहम जाते हैं, कुत्ता भौंके तो डर जाते हैं, याद रखिये ! अगर हम क़ब्र में इस ह़ाल में पहुंचे कि हमारे पल्ले न नमाज़ें हुईं और न रमज़ानुल मुबारक के रोज़े, दुनिया में दाढ़ी मुंडाते रहे, इंग्लिश लिबास पहनते रहे, सर

पर ज़ुल्फ़ें रखने के बजाए त़रह़ त़रह़ की तराश ख़राश वाले बाल रखते रहे, सर पर इ़मामा शरीफ़ सजाने के बजाए नंगे सर घूमते रहे, सिर्फ़ो सिर्फ़ मॉडर्न और जदीद दौर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारते रहे, अगर ऐसा हुवा तो क़ब्र में हमारा क्या बनेगा और हमें अ़ज़ाबे क़ब्र से कौन बचाएगा ?

अफ़सोस ! सद करोड़ अफ़सोस ! अगर कोई इस्लामी भाई हमें समझाने की कोशिश करे तो इस के बारे में हमारे तअस्सुरात कुछ इस त़रह़ के होते हैं : "येह तो पुराने ज़माने की बातें ले कर बैठ गए हैं, इन्सान चांद पर पहुंच गया है लेकिन मौलवी लोग पता नहीं क्या कर रहे हैं वग़ैरा वग़ैरा।" देखिये ! मौलवी साह़िब इस बुज़ुर्ग हस्ती की बातें बताते हैं जिस ने ज़मीन पर रहते हुए उंगली के इशारे से चांद के दो टुकड़े कर दिये थे और वोह शबे मेराज चांद से वराउल वरा (यानी बहुत दूर) बल्कि अ़र्शे आज़म से भी वरा तशरीफ़ ले गए थे।

कहते हैं सत़ह़ पे चांद की इन्सान गया
अ़र्शे आज़म से वरा त़ैबा का सुल्त़ान गया

मौलवी साह़िब की बातों को दक़्यानूसी समझने वाले अगर क़ुरआने पाक को समझ कर पढ़ें और अल्लाह पाक के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अह़ादीसे मुबारका का बग़ौर मुत़ालआ़ करें तो उन्हें पता चल जाएगा कि इस्लाम और शरीअ़त की तालीमात कितनी उ़म्दा हैं।

इस दुनियाए फ़ानी में हर एक को मरना है

(अमीरे अहले सुन्नत, मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इरशाद फ़रमाते हैं :) इस दुनियाए फ़ानी में हर एक को मरना है किसी को भी हमेशा नहीं रहना। एक वक़्त था कि हमारे दादा, दादी और नाना, नानी इस दुनिया में हुवा करते थे मगर अब उन में से कोई भी ज़िन्दा नहीं रहा। आह ! मां बाप

भी इन्तिक़ाल कर गए और बड़े भाई और दो तीन बहनें भी इन्तिक़ाल कर गईं, उन में से बाज़ों को मैं ने ख़ुद इन्तिक़ाल करते देखा है बल्कि बाज़ों को तो अपने हाथों से क़ब्र में उतारा है। जब सब चले गए तो यक़ीनन एक दिन मुझे भी इस दुनिया से रुख़्सत हो जाना है। किसी ने क्या ख़ूब कहा है :

नसीमे सुब्ह गुल्शन में गुलों से खेलती होगी
किसी की आख़िरी हिचकी किसी की दिल्लगी होगी

आज किसी की शादी की पहली रात ख़त्म हुई होगी, वोह अपने अन्दर बहुत सी ख़ुशियां महसूस कर रहा होगा जब कि आज ही कोई अपने बिस्तरे मर्ग पर दम तोड़ रहा होगा। इसी त़रह़ कितने दूल्हे ऐसे देखे गए हैं कि जो कल तक फूलों का हार गले में डाले नवाफ़िल पढ़ने के लिये ख़िरामां ख़िरामां मस्जिद की त़रफ़ जा रहे थे, उन पर फूल और नोट बरसाए जा रहे थे, मेहमानों के लिये ख़ूब देगें पकाई जा रही थीं और ख़ुशियां समाती नहीं थीं। आह ! फिर एक वक़्त ऐसा आया कि उन्ही दूल्हों पर दोबारा फूल डाले गए लेकिन अब वोह शादी की ख़ुशी में शुक्राने के नवाफ़िल पढ़ने के लिये ख़िरामां ख़िरामां मस्जिद नहीं जा रहे थे बल्कि पिंजरे जैसी डोली में बन्द और लोगों के कन्धों पर सुवार हो कर क़ब्रिस्तान की त़रफ़ जा रहे थे, पहले शादियों के मौक़अ़ पर जिन रिश्तेदारों और दोस्त व अह़बाब के लबों से हंसी के फ़व्वारे उबल रहे थे आज उन की आंखों से आंसुओं के धारे चल रहे हैं। इस ज़िम्न में एक नौजवान का इब्रतनाक वाक़िआ़ पढ़िये, चुनान्चे

शादी की पहली रात गुर्दे फ़ेल हो गए

(अमीरे अहले सुन्नत, मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ इरशाद फ़रमाते हैं :) हमारी बिरादरी के एक नौजवान की भरपूर जोशो ख़रोश के साथ मॉडर्न अन्दाज़ में शादी हुई, अभी इस की शादी की पहली रात ही थी

कि इस बेचारे के दोनों गुर्दे फ़ेल हो गए। मैं इ़यादत के लिये हॉस्पिटल पहुंचा और उसे देख कर सोचने लगा कि अगर येह ज़िन्दा बच गया तो शायद नमाज़ी बन जाए और अपनी आख़िरत संवारने के लिये तय्यार हो जाए लेकिन वोह बेचारा जांबर (यानी सेह़तयाब) न हो सका।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर कीजिये ! वोह नौजवान जिस ने चन्द रोज़ पहले हार पहने थे और नवाफ़िल पढ़ने के लिये पैदल चल कर मस्जिद में गया था बेचारे के गुर्दे फ़ेल हो गए और फिर कुछ ही दिनों बाद उसे कांधों पर सुवार कर के अन्धेरी क़ब्र में उतार दिया गया।

ऐ जवानी पर इतराने वालो ! ऐ जवानी पर फूल कर ख़ुदा को भूल जाने वालो ! याद रखो !

ढल जाएगी येह जवानी जिस पर तुझ को नाज़ है   तू बजा ले चाहे जितना चार दिन का साज़ है

फ़िरिश्ते की पुकार

ह़ज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : मैं ने एक किताब में पढ़ा है कि चौथे आस्मान पर एक फ़िरिश्ता येह निदा करता है : ऐ 40 साल वालो ! तुम खेती हो, हम तुम्हारी फ़स्ल काटेंगे। ऐ 50 साल वालो ! तुम्हारे लिये वोही है जो तुम आगे भेज चुके और जो पीछे छोड़ आए। ऐ 60 साल वालो ! तुम्हारे लिये कोई उ़ज़्र नहीं। काश ! मख़्लूक़ को पैदा न किया गया होता और जब पैदा कर ही दिया गया तो ऐ काश ! जान लेते कि क्यूं पैदा किये गए हैं ? तुम्हारे पास क़ियामत आने ही वाली है पस तय्यारी कर लो। (حلیۃ الاولیاء، 4/36، حدیث:4669)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जिस दुनिया पर हम फ़रेफ़्ता व शेफ़्ता हैं और जिस दुनिया के ह़ुसूल की ख़ातिर हम ने ह़राम व ह़लाल की तमीज़ नहीं रखी, अ़नक़रीब वोह हम से छूट जाएगी। हमारे दरमियान कितने ही ऐसे अफ़राद मौजूद हैं

जिन के चेहरों से बुढ़ापे के आसार नुमायां हैं और उन की ह़ालत येह है कि उन में से कोई दाढ़ी मुंडा है तो किसी ने एक मुठ्ठी से कम दाढ़ी रखी हुई है, किसी की गालियां बकने की आ़दत है तो कोई बे नमाज़ी है, ऐसों को फ़ौरन तौबा कर लेनी चाहिये कि बुढ़ापे के बाद जवानी नहीं आएगी। अ़लबत्ता अगर कोई जवान अपने अन्दर येह उमंग रखता है कि बुढ़ापे में तौबा कर लूंगा तो येह अलग बात है मगर इस जवान की येह उमंग भी ख़ाम ख़याली और शैत़ान की त़रफ़ से धोका है क्यूंकि अब बुढ़ापा भी मुक़द्दर वाले को मुयस्सर आता है वरना बहुत से नौजवान बुढ़ापे की दहलीज़ पर क़दम रखने से पहले ही मौत का शिकार हो कर अन्धेरी क़ब्र में जा पहुंचते हैं। इस बात का अन्दाज़ा यूं भी लगाया जा सकता है कि आप अपने मह़ल्ले या बस्ती में रहने वाले अफ़राद को देख लीजिये अगर आप की बस्ती की आबादी एक हज़ार अफ़राद पर मुश्तमिल है तो उन में आप को शायद दस या पन्दरह बूढ़े और बूढ़ियां नज़र आएंगी बाक़ी आबादी जवानों पर मुश्तमिल होगी।

पता चला इस मुआ़शरे में एक या दो फ़ीसद बूढ़े अफ़राद हैं बक़िय्या लोग बुढ़ापा आने से पहले ही जवानी के आ़लम में इन्तिक़ाल कर जाते हैं। ना जाने रोज़ाना कितने नौजवान इस दुनिया से रुख़्सत होते हैं, इसी त़रह़ आप अपने शहर के सब से बड़े हॉस्पिटल चले जाइये वहां एडमिट मरीज़ों के रिश्तेदारों से मालूम कर लीजिये कि मरीज़ को कौन सा मरज़ लाह़िक़ है और इस की उ़म्र कितनी है ? कोई कहेगा : हमारे मरीज़ को दो महीने से पेट में दर्द है और इस की उ़म्र 23 साल है, कोई बताएगा : हमारे मरीज़ को आख़िरी स्टेज का टीबी है और इस की उ़म्र 35 साल है यानी बहुत से मरीज़ों की उ़म्र 40 साल के अन्दर अन्दर होगी। हॉस्पिटल में आप को बाज़ बच्चे भी एडमिट नज़र आएंगे और कुछ बच्चों के बारे में पता चलेगा कि बेचारे ब्लड कैंसर में मुब्तला हैं।

ऐन जवानी के आ़लम में इन्तिक़ाल

(अमीरे अहले सुन्नत, मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इरशाद फ़रमाते हैं :) मेरा एक पीर भाई था जिस की उ़म्र बीस साल छे माह थी, वोह बेचारा ख़ून के सरत़ान (यानी ब्लड कैंसर) में मुब्तला हो कर भरपूर जवानी के आ़लम में इन्तिक़ाल कर गया।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप वक़्तन फ़वक़्तन लोगों के जनाज़े उठते हुए देखते होंगे बल्कि मुम्किन है आप के घर से भी कभी कोई जनाज़ा उठा हो लेकिन उस वक़्त आप शुऊ़र की उ़म्र को न पहुंचे हों। आप को बहुत से ऐसे लोग मिल जाएंगे कि जिन के वालिद साह़िब इस दुनिया से रुख़्सत हो गए होंगे और इन्तिक़ाल करने के बाद उन्हों ने ख़ुद अपने हाथों से अपने वालिद साह़िब की आंखें बन्द की होंगी, किसी ने अपने दादाजान के पांव के अंगूठे बांधे होंगे, किसी ने अपने जवान भाई के जनाज़े को कन्धा दिया होगा तो किसी ने अपनी मां का जनाज़ा उठाया होगा और किसी ने अपने छोटे बच्चे को दफ़्नाया होगा, अलग़रज़ शायद ही कोई ऐसा हो कि जिस के घर से जनाज़ा न उठाया गया हो।

जब किसी के घर से जनाज़ा उठता है तो मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام उस घर के दरवाज़े पर खड़े हो जाते हैं और लोगों को रोता चिल्लाता देख कर फ़रमाते हैं : मुझे क्यूं कोसते और बुरा भला कहते हो ? मैं तो अल्लाह पाक के हुक्म से रूह़ क़ब्ज़ करने के लिये आता हूं। ऐ मय्यित पर रोने वालो सुन लो ! ख़ुदा की क़सम ! तुम में से जब तक एक भी ज़िन्दा है मैं उस घर में बार बार आऊंगा और हर एक को बारी बारी ले जाऊंगा अगर लोग मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام की येह पुकार और एलान सुन लेते तो मय्यित को भूल कर अपने आप पर रोना शुरूअ़ कर देते।

(फ़ुतूहाते मक्किया, 8/465 माख़ूज़न)

आह ! बद क़िस्मती से हम जनाज़ों से इब्रत ह़ासिल नहीं करते ! जब कभी हमारे घर से जनाज़ा उठता है तो हम ख़ूब रोते धोते और पाबन्दी से नमाज़ें पढ़ना शुरूअ़ कर देते हैं लेकिन फिर कुछ ही दिन गुज़रने के बाद मय्यित को भूल कर नमाज़ों से दूर हो जाते हैं। हम मय्यित को क्यूं भूलते हैं ? इस की वज्ह एक रिवायत में कुछ यूं बयान की गई है : जब मय्यित को दफ़्ना कर लोग वापस घर जा रहे होते हैं तो एक फ़रिश्ता क़ब्र की मिट्टी उठाता है और जाने वालों पर छिड़क कर कहता है : ऐ लोगो ! जाओ दुनिया के कामों में मश्ग़ूल हो जाओ। (शर्हुस्सुदूर, स. 103 मुलख़्ख़सन)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! जब कोई इन्तिक़ाल करता है तो आहिस्ता आहिस्ता उस के इन्तिक़ाल का ग़म ख़त्म होता चला जाता है यहां तक कि एक वक़्त ऐसा आता है कि लोग इन्तिक़ाल करने वाले अपने रिश्तेदारों, औलाद और मां बाप को भूल कर दुनिया की रंगीनियों में खो जाते हैं। जो मुसलमान दुनिया से रुख़्सत हो चुके हमें उन के बारे में सोचना चाहिये कि इस वक़्त उन पर कैसी कसमपुरसी और बेकसी छाई होगी ! ग़ौर कीजिये ! जब एक दिन हमें भी हमारे नाज़ उठाने वाले अपने कन्धों पर उठाए क़ब्रिस्तान ले जा रहे होंगे और आज हमें मिस्टर कहने वाले कल मर्ह़ूम कह कर बुला रहे होंगे तो हम पर कैसी बेकसी छाई होगी ? अगर उस वक़्त مَعَاذَ الله हमारे पास नमाज़ें न हुईं, रमज़ानुल मुबारक के रोज़े न हुए, आमाल नामा क़दम क़दम पर किये जाने वाले गुनाहों से पुर हुवा, अल्लाह पाक नाराज़ हुवा और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रूठ गए तो ऐसी सूरत में क़ब्र हमारे साथ किस त़रह़ का सुलूक करेगी ? इसे ज़रा ग़ौर से पढ़िये ! चुनान्चे

नमाज़ में सुस्ती करने वालों की सज़ा

एक रिवायत में है : नमाज़ में सुस्ती करने वालों को क़ब्र ऐसे दबाएगी कि

उन की पस्लियां टूट फूट कर एक दूसरे में पैवस्त हो जाएंगी।

(क़ुर्रतुल उ़यून मअ़ रौज़ुल फ़ाइक़, स. 383)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! अ़ज़ाबे क़ब्र से न कराटे का फ़न बचा सकेगा और न पहलवानी के दाव पेच, न बॉक्सिंग के पंच क़ब्र की गिरिफ़्त से बचा पाएंगे और न किसी क़िस्म का अस्लह़ा। आह ! जब क़ब्र दबाएगी तो पस्लियां टूट फूट कर एक दूसरे में घुस जाएंगी। याद रहे ! टूटी हुई हड्डियां जोड़ने के लिये क़ब्र में न कोई बोन स्पेशलिस्ट आएगा और न ही कोई मेडीकल सर्जन या ह़कीम वग़ैरा बल्कि वहां तो सांप बिच्छू लपक लपक कर आ रहे होंगे और आग भी बढ़ती चली जा रही होगी और येह सब रब्बे करीम की नाराज़ी की सूरत में होगा। देखिये ! हम ने दुनिया की गर्मी से बचने के लिये तो घर में पंखा और एयर कन्डीशनर लगा लिया लेकिन क़ब्र की गर्मी से बचने के लिये नमाज़ का कोई एहतिमाम न किया, यूंही हुस्ने अख़्लाक़, सच्चाई, अमानतदारी, दियानतदारी और दीगर नेक काम जो हमारे लिये क़ब्र में राह़त का सामान हो सकते थे उन का कोई इन्तिज़ाम न किया। हम ने सिर्फ़ अपने मकानात को फ़र्नीचर से सजाया ताकि आराम मिले, मकान में रौशनदान बनाया ताकि रौशनी ह़ासिल हो लेकिन अफ़सोस ! क़ब्र में जन्नत के रौशनदान का कोई इन्तिज़ाम न किया।

बरोज़े क़ियामत ह़सरतो नदामत

ऐ आशिक़ाने रसूल ! ग़फ़्लत की नींद से बेदार हो जाइये ! याद रखिये ! अगर हम अल्लाह पाक और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी नहीं करेंगे तो हमारा अन्जाम किया होगा ? इस सिल्सिले में अल्लाह पाक का सच्चा कलाम ग़ौर से सुनिये ! चुनान्चे इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُوْلُوْنَ يٰلَيْتَنَآ اَطَعْنَا اللّٰهَ وَاَطَعْنَا الرَّسُوْلَا ۝٦٦﴾ (پ22، الاحزاب:66)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन उन के मुंह उलट उलट कर आग में तले जाएंगे कहते होंगे हाय किसी तरह हम ने अल्लाह का हुक्म माना होता और रसूल का हुक्म माना होता।

("कन्ज़ुल ईमान" मेरे आक़ा आला ह़ज़रत आ़शिक़े रसूल, वलिय्ये कामिल मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का तर्जमए क़ुरआन है। आप भी अपने घर पर सिर्फ़ तर्जमए क़ुरआन कन्ज़ुल ईमान ही रखें।)

ऐ बे नमाज़ियो ! तुम भी सुनो, ऐ माहे रमज़ान के रोज़े क़ज़ा कर डालने वालो, ऐ फ़र्ज़ होने के बावुजूद ज़कात अदा न करने वालो, ऐ फ़र्ज़ हो जाने के बावुजूद ह़ज अदा न करने वालो, ऐ मां बाप को सताने वालो, ऐ दाढ़ी मुंडाने या एक मुठ्ठी से कम करवाने वालो, ऐ वीडियो गेम्ज़ खेलने और खिलाने वालो, ऐ फ़िल्में ड्रामे देखने और दिखाने वालो, ऐ गाने बाजे सुनने और सुनाने वालो, ऐ धोका दे कर मिलावट का माल बेचने वालो, ऐ रिश्वत का लेन देन करने वालो, ऐ सूद ख़ोरी में मुब्तला रहने वालो सब ग़ौर से सुनो ! अगर अल्लाह पाक नाराज़ हो गया, उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रूठ गए और ईमान बरबाद हो गया तो फिर दुनिया की कोई त़ाक़त तुम्हें अ़ज़ाबे आख़िरत से नहीं बचा पाएगी लिहाज़ा अभी मौक़अ़ है, तौबा का दरवाज़ा खुला है, अभी तौबा की जा सकती है वरना बाद में आप की तालीम, आला अस्नाद, बड़ी बड़ी डिग्रियां और आप का फ़न आप को अ़ज़ाबे आख़िरत से नहीं बचा पाएगा।

अ़ज़ाबे जहन्नम में गिरिफ़्तार लोग पहले तो अफ़सोस व नदामत से कहेंगे : ऐ काश ! हम ने अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हुक्म माना होता, फिर कहेंगे :

وَقَالُوۡا رَبَّنَاۤ اِنَّاۤ اَطَعۡنَا سَادَتَنَا وَ كُبَرَآءَنَا فَاَضَلُّوۡنَا السَّبِيۡلَا ﴿۶۷﴾ رَبَّنَاۤ اٰتِهِمۡ ضِعۡفَيۡنِ مِنَ الۡعَذَابِ وَالۡعَنۡهُمۡ لَعۡنًا كَبِيۡرًا ﴿۶۸﴾

(پ22،الاحزاب:67،68)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और कहेंगे ऐ हमारे रब हम अपने सरदारों और अपने बड़ों के कहने पर चले तो उन्हों ने हमें राह से बहका दिया ऐ हमारे रब उन्हें आग का दोना (दुगना) अ़ज़ाब दे और उन पर बड़ी लानत कर।

दुनिया व आख़िरत में कामयाब कौन ?

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! दुनिया व आख़िरत में कामयाब वोही है जो अल्लाह पाक और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इत़ाअ़त गुज़ार और फ़रमां बरदार है जैसा कि अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوۡلُوۡا قَوۡلًا سَدِيۡدًا ۙ﴿۷۰﴾ يُّصۡلِحۡ لَكُمۡ اَعۡمَالَكُمۡ وَيَغۡفِرۡ لَكُمۡ ذُنُوۡبَكُمۡ ؕ وَمَنۡ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوۡلَهٗ فَقَدۡ فَازَ فَوۡزًا عَظِيۡمًا ﴿۷۱﴾

(پ22،الاحزاب:70،71)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और सीधी बात कहो तुम्हारे आमाल तुम्हारे लिये संवार देगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और जो अल्लाह और उस के रसूल की फ़रमां बरदारी करे उस ने बड़ी कामयाबी पाई।

ग़ौर कीजिये ! इन आयाते मुबारका में येह नहीं फ़रमाया गया कि जो मैट्रिक, इन्टर, बी ए, बी कॉम कर ले या फिर इन्जिनियर, डॉक्टर, वकील या वज़ीर बन जाए वोह कामयाब है बल्कि इरशाद फ़रमाया गया : "जो अल्लाह और उस के रसूल की फ़रमां बरदारी करे उस ने बड़ी कामयाबी पाई।" आज हम दुन्यवी इम्तिह़ानात में कामयाब होने की दुआ़ ख़ुद भी करते और दूसरों से भी करवाते हैं लेकिन अस्ल इम्तिह़ान क़ब्रो आख़िरत का है और इस में कामयाब होने के लिये अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी ज़रूरी है। अपना येह ज़ेहन बना लीजिये कि हमें अल्लाह पाक और उस के प्यारे ह़बीब

صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पसन्द को अपनी पसन्द पर तरजीह़ देनी है मसलन अगर नफ़्स कहे कि सर्दी बहुत है, वुज़ू करते हुए ठन्ड लगेगी बाद में नमाज़ पढ़ लेना तो अब हमें नफ़्स की मुख़ालफ़त करते हुए नमाज़ पढ़नी चाहिये क्यूंकि अल्लाह पाक ने क़ुरआने मजीद में जगह जगह नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया है जैसा कि पारह 1, सूरए बक़रह की आयत नम्बर 43 में इरशाद फ़रमाया : ﴿ اَقِیْمُوا الصَّلٰوةَ ﴾ "तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : नमाज़ क़ाइम रखो।" नीज़ हमारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी बार बार नमाज़ पढ़ने की तरग़ीब दिलाई है।

याद रखिये ! जो जान बूझ कर एक नमाज़ भी छोड़ेगा वोह हज़ारों साल जहन्नम में रहने का मुस्तह़िक़ ठहरेगा। नीज़ नमाज़ न पढ़ने वाले रब तआला के नाराज़ होने की सूरत में जहन्नम में जाएंगे और जब जन्नती उन से पूछेंगे कि तुम्हें क्या चीज़ जहन्नम में ले गई ? तो वोह जवाब देंगे कि हम नमाज़ नहीं पढ़ते थे जैसा कि क़ुरआने पाक में है :

فِیْ جَنّٰتٍ ﱂ یَتَسَآءَلُوْنَ ﴿۴۰﴾ عَنِ الْمُجْرِمِیْنَ ﴿۴۱﴾ مَا سَلَكَكُمْ فِیْ سَقَرَ ﴿۴۲﴾ قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّیْنَ ﴿۴۳﴾

(پ29،المدثر:40تا43)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बाग़ों में पूछते हैं मुजरिमों से तुम्हें क्या बात दोज़ख़ में ले गई वोह बोले हम नमाज़ न पढ़ते थे।

देखिये ! अल्लाह पाक और उस के प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया है जब कि नफ़्स नमाज़ पढ़ने से मना करता है तो किस की मानोगे अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मानोगे या नफ़्स की ? इसी त़रह़ अल्लाह पाक के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें दाढ़ी बढ़ाने का हुक्म दिया है जैसा कि ह़दीसे पाक में है : मूंछें ख़ूब पस्त करो और दाढ़ियों को मुआफ़ी दो (यानी बढ़ाओ) यहूदियों की सी सूरत न बनाओ।

(شرح معانی الآثار،4/28،حدیث:6422-6424ملتقطاً)

नफ़्स कहता है दाढ़ी न रखो अफ़्सर कहता है दाढ़ी न रखो मां बाप कहते हैं दाढ़ी न रखो तो किस की मानोगे ? अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मानोगे या नफ़्स की ?

याद रखिये ! अगर मां बाप दाढ़ी रखने से मना करें तो इस सिल्सिले में उन की बात नहीं मानी जाएगी क्यूंकि जब अल्लाह पाक के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दाढ़ी रखने का हुक्म दिया तो अब दाढ़ी रखना वाजिब और मुंडाना ह़राम हो गया। याद रहे ! दाढ़ी मुंडाना या एक मुठ्ठी से छोटी करवाना दोनों ना जाइज़ हैं। (फ़तावा रज़विय्या, 22/581 मुलख़्ख़सन) निय्यत कीजिये कि आज के बाद हम दाढ़ी नहीं मुंडाएंगे और न ही तराश ख़राश कर के एक मुठ्ठी से कम करवाएंगे।

आंखों में जहन्नम की आग

ऐ आशिक़ाने रसूल ! आज कल हमारे मुआशरे में गाने बाजे और फ़िल्में ड्रामे आम हो गए हैं और उन की नुहूसत से हमारा मुआशरा तबाहो बरबाद हो चुका है। मन्क़ूल है : जो अपनी आंख़ो को ह़राम से पुर करेगा उस की आंखों को जहन्नम की आग से पुर कर दिया जाएगा। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 10)

ग़ौर कीजिये ! जब आंख में गर्द का मामूली सा ज़र्रा पड़ता है तो आंख लाल हो जाती है और तक्लीफ़ बरदाश्त नहीं हो पाती तो फिर आख़िरत में जहन्नम की आग कैसे बरदाश्त हो पाएगी ! इस ज़िम्न में एक और रिवायत पढ़िये, चुनान्चे ह़ज़रत इमाम ह़ाफ़िज़ अबुल क़ासिम सुलैमान त़बरानी नक़्ल करते हैं : प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (ख़्वाब में) एक मन्ज़र येह भी देखा कि कुछ लोगों की आंखों और कानों में कील ठुके हुए हैं। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ की गई : येह वोह लोग हैं जो वोह देखते हैं जो उन्हें नहीं देखना चाहिये और वोह सुनते हैं जो उन्हें नहीं सुनना चाहिये। (معجم کبیر، 8/156، حدیث:7666ملخصاً)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अ़हद कीजिये कि हम अल्लाह पाक और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा के लिये फ़िल्में ड्रामे देखने और गाने बाजे सुनने से सच्ची तौबा करते हैं और आज के बाद हम फ़िल्में ड्रामे देखने और गाने बाजे सुनने से बचेंगे। اِنْ شَآءَ اللّٰه

अगले हफ़्ते का रिसाला

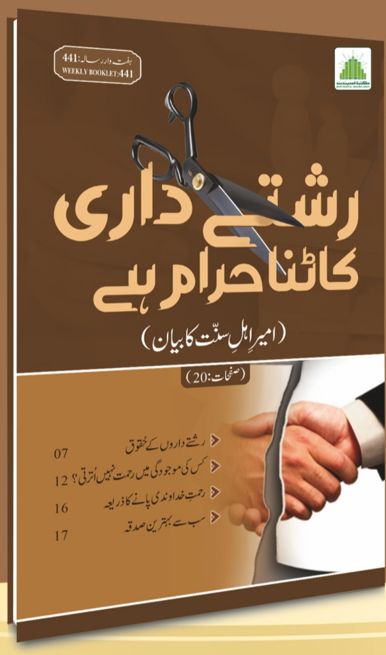

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

مکتبۃ المدینہ ہند
MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025